

छोटे उपाय, महती गति: विकसित भारत के लिए सूक्ष्म वित्त*

श्री स्वामीनाथन जे.

श्री हर्ष भानवाला एवं एमएफआईएन के बोर्ड के अन्य प्रतिष्ठित सदस्य; एमएफआईएन के सीईओ डॉ. आलोक मिश्रा; डॉ. निरुपम मेहरोत्रा, निदेशक, ग्रामीण विकास बैंकर संस्थान; उद्योग जगत के सम्मानित अग्रणी, विशिष्ट अतिथिगण, एएससीईएनडी (असेंड) कार्यक्रम के पुरस्कार विजेता, देवियों और सज्जनों। सुसंध्या।

आज माइक्रो मेटर्स: मैक्रो व्यू - इंडिया माइक्रोफाइनेंस रिव्यू फाइनेंस वित्तीय वर्ष 2024-25 और "विकसित भारत के लिए माइक्रोफाइनेंस" पर विशेष सत्र के शुभारंभ में आपके साथ जुड़कर खुशी हो रही है। मैं, डॉ. आलोक मिश्रा और एमएफआईएन टीम को इस क्षेत्र की समय पर सच्ची तस्वीर दिखाने और आगे की राह के लिए एक पथ-प्रदर्शक तैयार करने के लिए बधाई देता हूँ।

इस वर्ष की समीक्षा का विषय एक शक्तिशाली विचार को दर्शाता है: जब सूक्ष्म वित्त (माइक्रोफाइनेंस) को जिम्मेदारी से वितरित किया जाता है, तो यह "सूक्ष्म" नहीं रहता है। यह वृहत प्रगति बन जाता है। यह पहुंच को आजीविका में, उधारकर्ताओं को कारोबारियों में और अनौपचारिक गतिविधि को मापने योग्य आर्थिक उत्पादन में बदल देता है। जैसे-जैसे हम 'विकसित भारत 2047' की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं, यह प्रश्न उठता है कि सूक्ष्म वित्त सर्वाधिक योगदान कैसे दे सकता है - हम इसके प्रभाव को किस प्रकार सुदृढ़ता, पारदर्शिता और जवाबदेही के साथ व्यापक स्तर पर विस्तार दे सकते हैं।

सूक्ष्म वित्त (माइक्रोफाइनेंस) अब क्यों मायने रखता है?

पिछले एक दशक में, भारत ने समावेशन के लिए मजबूत नींव रखी है। जन धन ने परिवारों को एक आधारभूत खाता प्रदान दिया है, आधार ने सत्यापन को आसान बनाया है, यूपीआई ने छोटे भुगतानों को तत्काल बनाया है, और अकाउंट एग्रीगेटर फ्रेमवर्क में सहमति से नकदी-प्रवाह डेटा को अनलॉक करने की क्षमता है। इन सार्वजनिक प्लैटफॉर्म पर, सूक्ष्म वित्त पारंपरिक

* 14 नवंबर 2025 को मुंबई में एमएफआईएन कार्यक्रम में उप गवर्नर श्री स्वामीनाथन जे. का भाषण।

शाखा नेटवर्क से कहीं आगे निकल सकता है।

यह प्रगति आंकड़ों में दिखाई देती है। वित्तीय समावेशन सूचकांक 31 मार्च 2017 के 43.4 से बढ़कर 31 मार्च 2025 को 67.0 हो गया है। यह पहुंच और उपलब्धता में एक सार्थक बदलाव है। हालाँकि, अब आगे का कार्य गहनता और उपयोग की गुणवत्ता पर आधारित है। इस संदर्भ में, मैं चार कारण साझा करना चाहता हूँ कि सूक्ष्म वित्त क्यों मायने रखता है।

सबसे पहले, यह असमानता को दूर करता है। कई कम आय वाले परिवारों की आय अनियमित होती है, उनके पास कम कागजात होते हैं, और कोई जमानत नहीं होती। सूक्ष्म वित्त उन्हें छोटे ऋण लेने में मदद करता है, जहाँ किशतें सैलरी वाले कैलेंडर के बजाय असली कैश साइकिल के हिसाब से होती हैं।

दूसरा, यह उत्पादक क्षमता निर्माण करता है। ऋण का उपयोग वस्तु सूची (इन्वेंट्री), पशुधन, साधन और कार्यशील पूंजी में किया जाता है। छोटी आस्तियां नकदी उत्पन्न करना शुरू कर देती हैं जो अगले, थोड़े बड़े ऋण की चुकौती कर सकती हैं, जो अंततः एक व्यक्ति को सूक्ष्म उद्यमी में बदल सकती है।

तीसरा, यह नवोन्मेष के लिए एक मंच के रूप में कार्य करता है। सहायक डिजिटल यात्राएं, आधार-आधारित केवाईसी, वैकल्पिक क्रेडिट स्कोरिंग आदि सबसे पहले सूक्ष्म वित्त की सीमाओं पर सिद्ध हुए थे। यह क्षेत्र अक्सर जो प्रयोग करता है, वह बाकी प्रणाली को ऊंचाइयों पर ले जाते हैं।

अंत में, सबसे महत्वपूर्ण बात, यह उन लोगों को औपचारिक वित्त का लाभ देता है जो असमावेशित हैं और उन्हें लेनदेन रिकॉर्ड दर्ज करने में मदद करते हैं। यह लेनदेन रिकॉर्ड समय के साथ बड़े औपचारिक ऋण के द्वार खोलता है और परिवारों को बचत, बीमा और पेंशन से जोड़ता है।

संक्षेप में, सूक्ष्म वित्त पहुंच को उपयोग में बदल सकता है, और उपयोग को देश द्वारा पहले से ही रखी गई नींव की प्रगति में बदल सकता है। अब एजेंडा बेहतर हामीदारी अंकन (अंडरराइटिंग), उचित मूल्य निर्धारण और लगातार ग्राहक संरक्षण के माध्यम से पहुंच को समावेशी विकास में बदलने का होना चाहिए। इसे ध्यान में रखते हुए, मैं पांच प्रमुख विचारों की रूपरेखा के बारे में बताता हूँ जो अगले चरण को आकार दे सकते हैं।

अगले चरण को आकार देने के लिए पांच विचार

केवल आवेदक की ही नहीं, बल्कि परिवार की सेवा करें: क्रेडिट से जुड़े निर्णय तब सबसे अच्छे होते हैं जब वे परिवार के पूरे पूर्ण नकद जीवन चक्र को समझते हैं। बचत की आदत, एक आधारभूत बीमा कवर और एक लघु आपातकालीन ऋण-व्यवस्था को बढ़ावा देना बेहतर है, क्योंकि ये सभी मिलकर ऋण गुणवत्ता का अंदाजा लगा सकते हैं।

मानव निर्णय के साथ प्रौद्योगिकी-सक्षम हामीदारी अंकन: प्रौद्योगिकी थिन फाइलों (बिना क्रेडिट हिस्ट्री वाली रिपोर्ट) की समस्या को दूर करने में मदद कर सकती है, लेकिन मानवीय विशेषज्ञ निर्णय बना रहना चाहिए। एआई मॉडल्स को समझाया जा सके, इसलिए इंसान अपवादों की समीक्षा करें, और नियमित रूप से बैक-टेस्ट परिणामों की समीक्षा करें। उद्देश्य सहजता लाना है, विवेक का साथ नहीं छोड़ना है।

मोनो-उत्पाद से लेकर सूक्ष्म-उद्यम वित्त तक: उत्पाद डिजाइन को इस बात से मेल खाने की आवश्यकता है कि लघु व्यवसाय वास्तव में कैसे पनपते हैं। एकल कार्यशील पूंजी ऋण अक्सर पहला कदम होता है; लेकिन इसे धीरे-धीरे इन्वेंट्री फाइनेंस, पूंजीगत आस्ति वित्तपोषण और आधारभूत भुगतान सहायता में आगे बढ़ना चाहिए।

पिरामिड के आधारभूत स्तर पर जलवायु सुदृढ़ता बनाएं: जलवायु अब एक ऋण संबंधी चर है। जिलों को गर्मी में वृद्धि, बाढ़, या अनियमित वर्षा का सामना करना पड़ता है जिससे घरेलू आय और संग्रह पर असर पड़ता है। ऋणदाताओं को ऐसे उत्पाद प्रस्तुत करने होंगे जो मौसम के आघातों के बाद भी ग्राहकों और पोर्टफोलियो को स्थिर रख सकें।

डेटा का जिम्मेदार उपयोग: रेल्स और डेटा को उधारकर्ता के हित में काम करना चाहिए। ग्राहक डेटा और उसकी गोपनीयता एक जिम्मेदारी है। सहमति स्पष्ट और स्थानीय भाषा में होनी चाहिए, डेटा का उपयोग बताए गए उद्देश्य के लिए किया जाना चाहिए, और भंडारण सुरक्षित रखा जाना चाहिए। अच्छी तरह से उपयोग किए जाने पर, ये रेल्स अति-ऋणग्रस्तता से बचाव करती हैं और अंधाधुंध अप-सेलिंग के बजाय जिम्मेदार वैयक्तिकरण को सक्षम बनाती हैं।

एक साथ मिलकर, इनका उद्देश्य शुरुआती पहुंच को नियमित उपयोग में परिवर्तित करना, नियमित उपयोग को स्थिर आय में और स्थिर आय को औपचारिक ऋण के स्पष्ट मार्ग में

बदलना है। अब इस क्षेत्र को विकास की ऐसी गुणवत्ता का लक्ष्य रखना चाहिए।

विनियामक पहलें और पर्यवेक्षी अपेक्षाएं

रिजर्व बैंक ने 2022 में सूक्ष्म वित्त ढांचे का सावधानीपूर्वक पुनः नियोजन किया। हितधारकों की व्यापक प्रतिक्रिया के बाद, समावेशन का विस्तार करने, उधारकर्ता कल्याण को केंद्र-बिंदु में रखने और सूक्ष्म वित्त प्रदान करने वाले सभी विनियमित ऋणदाताओं के लिए विनियमों को संरक्षित करने के व्यापक उद्देश्य के साथ एक संशोधित ढांचा जारी किया गया था। सूक्ष्म वित्त के रूप में क्या योग्य है, यह स्पष्ट करने के साथ-साथ, ढांचे ने मूल्य निर्धारण की सीमाओं को भी हटा दिया, जो उद्योग की लंबे समय से चली आ रही मांग है।

अधिक लचीलापन, आचरण के लिए एक उच्च मानक स्थापित करता है। रिजर्व बैंक को उम्मीद है कि ऋणदाता 2022 के ढांचे द्वारा प्रदान की गई गुंजाइश का उपयोग इस तरह से करेंगे कि जिससे उधारकर्ता कल्याण और दीर्घकालिक पोर्टफोलियो गुणवत्ता मजबूत हो। अतः, मैं अपनी कुछ अपेक्षाओं के बारे में बताता हूँ।

मूल्य निर्धारण और पारदर्शिता: मूल्य निर्धारण तर्कसंगत होना चाहिए, जो लागत, जोखिम और दक्षता में सुधार को दर्शाता हो, और उधारकर्ता की स्थिति का अनुचित लाभ नहीं उठाना चाहिए। ग्राहक एक स्पष्ट दृष्टिकोण के हकदार हैं, जिसका अर्थ है सीधी-साधी भाषा के ऋण समझौते/अनुबंध जो किशतों, शुल्क और कुल लागत को निर्धारित करते हैं; और कर्मचारी जो इन्हें स्थानीय भाषा में समझा सकते हैं। जहां प्रौद्योगिकी या वित्तपोषण सेवा की लागत को कम करते हैं, वहीं उधारकर्ताओं को भी लाभ मिलना चाहिए। संस्थाओं के बोर्डों से अपेक्षा की जाती है कि वे निधि की लागत और परिचालन दक्षता के प्रति स्प्रेड की समीक्षा करें, और आउटलेयर पर प्रश्न करें।

उधार देने के परिणामस्वरूप अति-ऋणग्रस्तता नहीं होनी चाहिए: एक उचित मूल्यांकन को आय के सभी स्रोतों पर विचार करना चाहिए, मौसमी परिवर्तनशीलता को पहचानना चाहिए, और सभी मौजूदा दायित्वों को सत्यापित करना चाहिए ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि अतिरिक्त उधार देने से अस्थिर ऋणग्रस्तता न हो।

संग्रह आचरण और शिकायत निवारण: आउटसोर्सिंग संग्रह जवाबदेही को कम नहीं करता है। ऋणदाता इस बात के लिए जिम्मेदार रहते हैं कि ग्राहकों के साथ कैसा व्यवहार किया जाता है, जिनमें कारोबार प्रतिनिधि (बीसी) और वसूली एजेंट शामिल हैं। शिकायतों को दर्ज करना आसान होना चाहिए, तुरंत स्वीकार की जानी चाहिए और प्रकाशित समय सीमा के भीतर उनका समाधान किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त, समाधान की गुणवत्ता उतनी ही मायने रखती है जितनी उसकी गति।

मॉडल जोखिम, विश्लेषण और निष्पक्षता: डिजिटल अंगीकरण जब उपयुक्तता में सुधार लाता है और घर्षण को कम करता है, तब वह स्वागत-योग्य होता है। एनालिटिक्स और मॉडल के लिए मजबूत अभिशासन की आवश्यकता होती है। इनपुट को प्रलेखित किया जाना चाहिए, तथा सटीकता और अवांछित पूर्वाग्रह के लिए परिणामों का परीक्षण किया जाना चाहिए।

सटीक रिपोर्टिंग: ब्यूरो रिपोर्टिंग समय पर और संपूर्ण होनी चाहिए ताकि उधारकर्ताओं का उचित पुनर्भुगतान व्यवहार बरकरार रहे एवं उधारदाता, उधारकर्ता की कुल देयताओं को देख सके। गलत या विलंबित रिपोर्टिंग से परिवारों और संस्थाओं, दोनों को नुकसान होता है।

परिचालन सुदृढ़ता एवं भागीदार स्वच्छता: सुदृढ़ता अंतिम छोर तक पहुंचनी चाहिए। शाखा, भागीदार डिवाइस स्तर पर साइबर स्वच्छता - ग्राहकों और संस्थानों, दोनों की सुरक्षा करती है। कारोबारी प्रतिनिधियों और डायरेक्ट सेलिंग एजेंटों के लिए भागीदार समुचित सावधानी (पार्टनर ड्यू डिलिजेंस) को एक सामान्य आधारभूत स्तर का पालन करना चाहिए जिसमें समय-समय पर आकस्मिक जाँच के साथ प्रशिक्षण, डेटा हैंडलिंग और मानकों की जांच को शामिल किया जाता है।

संकेंद्रण जोखिम एवं पूर्व चेतावनी: एकाग्रता, चाहे भौगोलिक हो या खंडीय, आघात को बढ़ा सकती है। पूर्व चेतावनी ढांचे, जो

स्किप पैटर्न, रोल-रेट, रिपीट टॉप-अप आदि को ट्रैक करते हैं, समय पर सही सुधार की अनुमति देते हैं।

अभिशासन, प्रोत्साहन और संस्कृति: प्रोत्साहन को जिम्मेदार वृद्धि, सटीक हामीदारी अंकन और अच्छे आचरण को पुरस्कृत करना चाहिए, न कि केवल परिमाण/मात्रा को। शिकायत विश्लेषण, संग्रह अपवाद और मूल्य निर्धारण आउटलेयर को बोर्ड का ध्यान एवं समय मिलना चाहिए।

अंततः यदि उद्योग मानक उच्च रहते हैं, तो विनियामक या पर्यवेक्षी मध्यक्षेप सामान्य रह सकता है। लचीलापन और जवाबदेही अभिन्न हैं; क्षेत्र का आयुकाल और स्थिति उस संतुलन पर निर्भर करता है।

मैं श्रीमती इला आर. भट्ट की एक पंक्ति¹ के साथ अपनी वाणी को विराम देना चाहता हूँ, जिन्होंने 'सेवा' की स्थापना की और 1970 के दशक में महिलाओं के नेतृत्व वाले स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से सूक्ष्म वित्त की अवधारणा का बीड़ा उठाया।

उन्होंने कहा, "जब हम मनुष्य को केंद्र में रखते हैं, तो हमें विकास का अधिक समग्र और एकीकृत दृष्टिकोण दिखने लगता है। हम अपनी गतिविधियों का स्वयं पर, जिस समाज में हम रहते हैं, और जिस ब्रह्मांड में हम रहते हैं, उस पर इसके प्रभाव के साथ सह-संबंधित महसूस करना शुरू करते हैं। और इस तरह हम दुनिया में संतुलन और सामंजस्य बहाल करते हैं।"

यदि हम इन बुनियादी बातों पर टिके रहते हैं, तो पहली बार ऋण लेने वाले ग्राहक और बड़े औपचारिक ऋण की ओर रुख करेंगे, और राज्यों एवं क्षेत्रों में वृद्धि की गुणवत्ता में बढ़ोतरी होगी। इस तरह सूक्ष्म प्रगति, वृहत प्रगति में परिवर्तित होती है, और इसी प्रकार हम विकसित भारत 2047 की ओर वृहत यात्रा को आगे बढ़ाते हैं। इस अवसर के लिए एमएफआईएन, पारितंत्र में ऋणदाताओं और भागीदारों तथा इस काम को अंतिम छोर तक ले जाने वाली फील्ड टीमों को मेरी बधाई और धन्यवाद। जय हिंद।

¹ महिला विश्व बैंकिंग, 18 अक्टूबर को मैकमास्टर विश्वविद्यालय में अहिंसा पर गांधी व्याख्यान में श्रीमती इला आर. भट्ट का भाषण 2013 | <https://www.womensworldbanking.org/insights/women-poverty-ela-bhatt-ghandi-lecture-nonviolence-mcmaster-university>.